[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3602

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

मध्यकालीन हिंदी काव्य में रंग संयोजन

डॉ. प्रतिभा सोलंकी, प्राध्यापक, हिंदी
शासकीय महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय, इन्दौर

साहित्य और चित्रकला का पारस्परिक घनिष्ठ अंतर्संबंध है। दोनो के माध्यम से जीवन के गहन उद्देष्यों की पूर्ति होती है। साहित्यकार के शब्द यदि हमारी भावना को उद्वेलित कर सकते हैं तो चित्रकार की तूलिका से अंकित रेखाएं और रंग भी हमारे हृदय के कोमल पक्ष को छूने की अद्भुत शक्ति लिए होते हैं। कवि और चित्रकार दोनो ही अपनी कला प्रतिभा के जरिये सौंदर्य रचना करते हैं। कविता में शब्दों का तथा चित्रों में रंग और रेखाओं का सौंदर्य मौजूद रहता है।[1] एक कुषल चित्रकार की भाँति साहित्यकार भी शब्दों के माध्यम से सुंदर बिंब एवं रंग संयोजन प्रस्तुत करता है।

मध्यकालीन हिंदी काव्य में भक्ति और श्रृंगार के अनुपम चित्र दृष्टिगत होते हैं। कबीर, जायसी, तुलसी, सूर, केषव, रहीम, घनानंद, सेनापति, पद्माकर, रसखान आदि के साहित्य में रंगबिरंगी छटा से युक्त चित्र मिलते हैं। लाल रंग सर्वाधिक उत्तेजक और आकर्षक माना गया है। इसके द्वारा उत्तेजना, क्रोध साहस, वीरता एवं श्रृंगारिकता प्रकट होती है।[2] लेकिन कबीर ने आत्मा का परमात्मा के प्रति तादात्म्य एवं समर्पण भाव इसी रंग संयोजन के माध्यम से प्रस्तुत किया है जब वे कहते हैं –

लाली मेरे लाल की जित देखूँ तित लाल
लाली देखन मैं गई, मैं भी हो गई लाल।।[3]

आत्मा और परमात्मा का एक ही रंग में एकाकार हो जाना, लाल रंग के माध्यम से कुषलता से अभिव्यंजित किया गया है। सूर ने भी इसी तरह राधा और कृष्ण के माध्यम से हृदय की रागानुगा वृत्ति को आश्रय दिया हैं –

राधा माधव भेंट भई।
राधा माधव माधव राधा, कीट भृंग गति होइ जु गई।
माधव राधा के रंग राचे, राधा माधव रंग रई।

इस प्रकार भक्त और भगवान दोनों एकाकार हो गए। रंगों के माध्यम से भावों को व्यक्त करने का कौषल सूर की महत्वपूर्ण विषेषता रही। उनके वात्सल्य एवं श्रृंगार दोनों रसों के चित्रण में कुषल रंग संयोजन मिलता हैं।
रहीम ने प्रेम की पराकाष्ठा को लाल रंग के संयोजन के माध्यम से इन शब्दों में व्यक्त किया है –

रहिमन प्रीति सराहिए, मिले होत रंग दून
ज्यो जरदी हरदी तजै, तजै सफेदी चून ।।

अर्थात् जिंदगी में रंग तभी दुगुना होता है जब हम स्वयं को परिवर्तित करें। वे हल्दी और चूने का उदाहरण देते हुए बताते हैं कि जब हल्दी और चूने को मिलाया जाता है तो हल्दी का पीला रंग और चूने का सफेद रंग दोनो ही अस्तित्व में नहीं रहते हैं। इन दोनो के मिश्रण से एक अलग ही रंग – लाल रंग बन जाता है जो इन दोनो से ज्यादा प्रभाव पूर्ण होता है। इसी प्रकार प्रेम में दोनो पक्षों को अहम् त्यागकर समर्पण भाव से एक दूसरे को अपनाना चाहिए तभी जीवन सार्थक होगा।
'एक सृजन शील कवि और चित्रकार दोनों ही कला के उपासक हैं। दोनों का सृजन नित नूतन, चित्ग्राही तथा जीवन वैविध्य से परिपूर्ण होता हैं।[4] कवि अपनी लेखनी से कविता को सुंदर रंगों से संयोजन प्रस्तुत करता है। बिहारी का यह दोहा तो रंग संयोजन का श्रेष्ठ उदाहरण माना जा सकता है –

मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झांई परे स्यामु हरित–दुति होइ ।।[5]

बिहारी सतसई के मंगलाचरण का यह दोहा बिहारी की उत्कृष्ट प्रतिभा से हमें परिचित कराने के साथ ही उनकी चित्रकार छवि को भी प्रस्तुत करता है। बिहारी कहते हैं कि वही राधा नागरी मेरी भव–बाधाओं को दूर करें जिनके तन की झलक पड़ने से कृष्ण हरे–भरे अर्थात् प्रसन्न वदन हो जाते हैं। चित्रकला में पीला और नीला रंग मिलकर हरा रंग बनाते हैं। यहाँ कृष्ण का

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

नीला (अर्थात् सांवला) और राधा का पीला (अर्थात् गौर वर्ण) दोनो मिलकर हरे रंग की सृष्टि करते हैं। ऐसा सुंदर रंग संयोजन कवि की कुषल कल्पना शक्ति का परिचायक है। इसी दोहे के दूसरे अर्थ में श्याम का आषय काले रंग से है। काला रंग यहाँ पाप, दुख, दरिद्रता का प्रतीक है। जो चित्रकला के सिद्धांतों में भी माना जाता है।[6] इसका अर्थ इस प्रकार है – हे वही राधा नागरी मेरी भव–बाधा दूर करे जिसकी कृपा से काले रंग वाले पाप, दुख इत्यादि हरित् अर्थात हतप्रभ, तेजहीन हो जाते हैं, दूर हो जाते हैं। इस प्रकार काले रंग से अंधकार ही नहीं, विभिन्न मनोदषाएँ भी व्यक्त की जाती हैं। काले रंग पर अन्य रंग नहीं चढ़ सकता है। सूरदास जी कहते हैं –

सूरदास की कारी कमरिया चढ़ें न दूजो रंग।

काले कंबल पर जिस प्रकार दूसरा रंग नहीं चढ़ सकता है उसी प्रकार भक्त पर ईष्वर भक्ति के अतिरिक्त अन्य रंग नहीं चढ़ सकता है। इसी प्रकार के भाव उन्होंने अन्यत्र भी व्यक्त किए हैं –

प्रकृति जोई जाके अंग परी। .....
धोये रंग जात कहु कैसे ज्यों कारी कमरी।[7]

अर्थात काली कमरी को कितना ही धोया जाये उसका रंग नहीं जाता है, इसी प्रकार व्यक्ति का स्वाभाव भी परिवर्तित नहीं होता है। काला रंग सभी पर अपना प्रभाव छोड़ता है। भक्ति में इसका एक अलग अर्थ भी कवि ने अपने काव्य सौष्ठव से दर्षाया है –

या अनुरागी चित्त की गति समुझै नहीं कोय।
ज्यों–ज्यों बूड़े स्याम रंग, त्यों–त्यों उज्जवल होय।।

काले रंग में डूबने से कोई भी वस्तु काली ही होती है लेकिन यहाँ विरोधाभासी स्थिति को दर्षाया गया है। भक्त का मन श्याम रंग अर्थात् कृष्ण भक्ति में जितना अधिक डूबेगा उतना ही उज्जवल होगा। यहाँ रंग संयोजन को कवि ने अपने कौषल से एक विषिष्ट रूप प्रदान किया है।
मध्यकालीन हिन्दी काव्य में इन रंगों को विविध संदर्भों में चित्रित किया गया है। कवियों में षिरोमणि तुलसी का दोहा दृष्टत्य हैं –

रहत–रहत रसना लरी, तृषा सूखि गे अंग।
तुलसी चातक प्रेम को नित नूतन रूचि रंग।।[8]

अपने प्यारे मेघ का नाम रहते–रहते चातक की जीभ लटक गई और प्यास के मारे सब अंग सूख गए : तुलसीदास जी कहते हैं कि चातक का प्रेम रंग तो नित्य नया और सुंदर ही होता जाता हैं। रंग का अन्य संदर्भ में उल्लेख करते हुए वे कहते हैं –

चरन चोंच लोचन रंगौ चलौ मराली चाल।
छीर नीर बिबरन समय बक उधरत तेहि काल।।[9]

अर्थात् बगुला चाहे अपने चरण, चोंच और आँखों को हंस की तरह रंग ले और हंस की सी चाल चलने लगे, परंतु जिस समय दूध और जल को अलग करने का अवसर आता है, उसकी पोल खुल जाती है। कष्ट अंत तक नहीं निभता।
कवि अपने अनुभव संसार से रंग संदर्भों को व्यक्त करता है। इनके संयोजन से वह मानव की मानसिक स्थितियों और प्रकृति में आए परिवर्तनों को दिखाने में भी समर्थ हैं। कृष्ण के वियोग में गोपियाँ कहती हैं –

मधुबन तुम कत रहत हरे
विरह वियोग स्याम सुंदर के ठाड़े क्यों न जरै।

इसी प्रकार के भाव जायसी ने भी व्यक्त किए है –

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

सुरूज बूड़ि उठा होई ताता। और मजीठ टेसू वन राता।।
भा बसंत, राती बनसपती। औ राते सब जोगी जती।।
भूमि जो भीजि भएउ सब गेरू। औ राते सब पंखि पखेरू।।
राती सती, अगिनि सब काया। गगन मेघ राते तेहि छाया।।

सायं प्रभात न जाने कितने लोग मेघ खंडों को रक्त वर्ण होते देखते हैं पर किस अनुराग से ये लाल हैं, इसे जायसी जैसे रहस्यदर्षी भावुक ही समझ सकते हैं।[10]
कवि रसलीन ने आँखों के सौंदर्य का श्वेत, श्याम और लाल रंगों के चित्रण द्वारा सजीव चित्र प्रस्तुत किया है –

अमिय हलाहल मद भरे स्वेत स्याम रतनार।
जियत मरत झुकि–झुकि परत जेहि चितवन इक बार।।

नायिका के नेत्र अमृत (सफेद), विष (काला), मद (लाल) से युक्त हैं। जिसका प्रभाव भी क्रमषः होता है।
उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कवि और चित्रकार दोनो ही अपनी रचनाओं में रंग संयोजन से मानवीय संवेदना, सस्स अनुभूतियों को व्यक्त करते हैं। रंगों का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव होता हैं। रंग हमारे विचारों को प्रभावित करते हैं और हमारी सफलता–असफलता के कारक बनते हैं। मध्यकालीन हिंदी काव्य में कवियों ने अपनी सूक्ष्म निरीक्षण दृष्टि और कल्पना शक्ति से रंग संयोजन को विविध संदर्भों में व्यक्त किया हैं। यह काव्य केवल साहित्यिक दृष्टि से ही नहीं अपितु चित्रकला के संदर्भ में भी अमूल्य निधि है। इसकी सरलता, माधुर्य, भाव प्रवणता, आस्था आदि ने चित्रांकन के लिए भारतीय चित्रकारों को नई दिषा प्रदान की है। रंग–संयोजन के विविध आयाम प्रदान किए हैं।

संदर्भ सूची

1 *भारतीय चित्रकला का इतिहास – प्रेमचंद गोस्वामी, पृष्ठ 189*
2 *रूपांकन – प्रमुख वर्णों की विषेषताएं एवं प्रभाव – डॉ. गिरितज किषोर अग्रवाल पृष्ठ 48*
3 *कबीर ग्रंथावली – सं. श्यामसुंदर दाए*
4 *भारतीय चित्रकला का इतिहास – प्रेमचंद गोस्वामी, पृष्ठ 193*
5 *बिहारी रत्नाकर – सं. श्री जगन्नाथ दास (रत्नाकर), पृष्ठ 1*
6 *रूपांकन – प्रमुख वर्णों की विषेषताएं एवं प्रभाव – डॉ. गिरितज किषोर अग्रवाल पृष्ठ 48*
7 *भ्रमर गीत सार, पृष्ठ 78*
8 *तुलसी – दोहावली, पृष्ठ 97*
9 *तुलसी – दोहावली, पृष्ठ 115*
10 *त्रिवेणी – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पृष्ठ 51*